जिसकी नीयत साफ होती है भगवान उसका रक्षक होता है। दादाजी की यह कहावत देवेश पर पूर्ण रूप से लागू होती है। इसी वजह से आज देवेश की मौज ही मौज है। अस्सी एकड़ जमीन का जमींदार, गांव में सबसे बड़ा मकान, उस पर सबसे ऊंचा दरवाजा, दरवाजे के आगे खड़े ट्रैक्टर जहां मकान की शोभा बढ़ाते प्रतीत होते हैं वहीं दरवाजे में दस पांच आदमी हुक्के का धुंधा उड़ाते नजर आते है। परंतु यहां तक पहुंचने के लिए देवेश को बहुत मेहनत करनी पड़ी है।

विनाश

कहानी

देवेश के पिताजी रितेश बड़े कर्जदार थे। मां जन्म देते ही चल बसी। वक्त बेवक्त सूखी रोटियों के सहारे देवेश ने जीने की शुरुआत की तो चारों तरफ गरीबी ही गरीबी का बोलबाला था। जमीन का लगान नहीं दिया गया तो जमीन गिरवी रखनी पड़ी। देवेश के होश संभालने के बाद दिन रात मेहनत करके, कच्चे मकान की जगह आलीशान मकान का निर्माण किया। कहते हैं कि प्रत्येक कामयाब पुरुष के पीछे एक औरत का हाथ होता है। देवेश की घरवाली के कदम घर में पड़ते ही देवेश ने दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक्की की।

बड़ा बेटा उमेश बिल्कुल देवेश पर गया है। काम करने में इतना माहिर कि पूछो मत। घर बाहर के काम के अलावा खेती बाड़ी के काम को भी बखूबी संभालता है उमेश। अपनी मां को कोई भी काम नहीं करने देता सभी काम स्वयं करता है। इसलिए पड़ोसी सब कहते हैं-उमेश मां के लिए लड़की और पिताजी के लिए लड़का है। छोटा बेटा सत्येश सारे गांव में सबसे तेज पढ़ाई में जाना जाता है। एक साल पहले सत्येश को चश्मा लगा तो उसकी मां को बहुत दुख हुआ। सारा दिन सारी रात इन मोटे-मोटे ग्रंथों में पता नहीं क्या ढूंढता रहता है, बहुत पढ़ लिया, अब क्या सारी उम्र पढ़ता ही रहेगा। सत्येश की मां उलाहने भरे स्वर में कहती। सत्येश मां को खुश करने के लिए एक बार किताब बंद कर देता। जैसे ही मां का भाषण बंद होता वह पुनः पुस्तक खोलकर पढ़ने में मस्त हो जाता। सत्येश की मां बेटे के आगे पीछे दूध तो कभी दही के कटोरे लिए घूमती रहती परंतु सत्येश को केवल पढ़ने की धुन सवार थी।

एक दिन देवेश खेत में से चारे का गट्ठा लेकर घर पहुंचा ही था कि डाकिया ने एक चिट्ठी उसको थमा दी। गट्ठे को जमीन पर गिरा देवेश ने चिट्ठी सत्येश को देते हुए कहा-'बेटे देखो तो किसकी चिट्ठी और कहां से आई है।' सत्येश ने चिट्ठी खोल के देखी तो देखता रह गया। उस चिट्ठी में सत्येश के सपने थे जो उसने रातों के गहन अंधकार में अपनी छत पर, चौबारे में देखे थे। चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते जब सत्येश ने आंखें बंद की तो उसको अपने घर के आंगन में 'डालर' बरसते नजर आए। सत्येश तो और भी देर तक सपनों में बैठा रहता यदि उसकी मां उसके कंधे हिलाकर नहीं पूछती कि 'बेटा ऐसा क्या आ गया चिट्ठी में हमें बतलाओ तो सही।' सत्येश मां के गले लगकर बोला-मां आज सारी मेहनत सफल हो गई, सारे सपने पूरे हो गए। दुनिया के सबसे खूबसूरत देश अमेरिका में मुझे नौकरी मिल गई मां। मां को भी बहुत खुशी हुई, देवेश एवं उमेश भी खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। बात सारे गांव में फैल गई कि देवेश के बेटे सत्येश को अमेरिका वालों ने बुला लिया है।

देवेश ने काफी कुछ सोच विचार करके कहा-'सत्येश दूसरे देश में नौकरी के लिए नहीं जाना। हमारे यहां किस चीज की कमी है। दूसरे घर से बाहर वे जाते हैं जिनके अपने घरों में कुछ नहीं होता। उमेश ने भी पिताजी की बात का समर्थन करते हुए कहा-'भाई सत्येश अपने यही कोई नौकरी देख ले। वहां अपने खान-पान, तीज-त्यौहार के लिए तरस जाएगा तू।' सत्येश यह सुनते ही एकदम उछल पड़ा और बोला- 'इन सबसे हटकर भी बहुत कुछ होता है।

जिंदगी में ईसान को पैसे, सुख सुविधा, वैभव की भी जरूरत होती है, जो आज मुझे इस चिट्ठी के मार्फत मिल रही है। मां को कुछ समझ नहीं आ रहा था वह बोली- 'आप इसे नौकरी करने सेक्यों मना कर रहे हो, ये सुबह जाएगा शाम को घर आ जाएगा।' यह सुनकर देवेश ने अपना सिर पकड़ लिया और कहा-'अमेरिका दिल्ली के पास है जो रोजाना आ जाएगा। सात समुंद्र पार है अमेरिका।' सत्येश के सपनों के सामने मां-बाप के लाड़-प्यार हार गए। अपनी मिट्टी व खेतों की खुशबू फीकी पड़ गई। सत्येश ने अपना फैसला सुना दिया। 'पिता जी आप लोग खुशी-खुशी मुझे जाने दे या नाराजगी से मुझे अमेरिका जाना है, किसी भी कीमत पर।'

जिस मां ने सत्येश को कभी अकेला खेत तक नहीं जाने दिया जब उस मां को पता चला कि सत्येश सात समुंद्र पार जाने लग रहा है तो वह पगला गई। सत्येश जब चलने लगा तो पूरा गांव इकट्ठा हो गया उसे विदाई देने। मां उस दिन बहुत रोई और इतना रोई कि आस-पड़ोस के लोगों के दिल भी पसीज गए और आंखें भर आईं। राम के बनवास के समय कौशल्या का रुदन भी मानों इसके आगे कम पड़ गया था। लेकिन बेटे को जाना था, चला गया। बस स्टैंड से बस में बैठकर रवाना होने लगा तो सत्येश ने उमेश से कहा-'भाई मां का ख्याल रखना'

देवेश की पत्नी ने चारपाई पकड़ ली। पहले खाना पीना कम हुआ बाद में बिल्कुल छूट गया। सत्येश के चौबारे में बड़ी-बड़ी कारों के पोस्टर अब भी यूं ही लगे हुए थे। सत्येश के सपने उसकी नौकरी और इन फोटो की कड़ी को जोड़ा तो उमेश को बात समझने में देर नहीं लगी। लेकिन उमेश यह नहीं समझ पा रहा था कि ये सब बातें मां को कैसे समझाए। तीन महीने बाद सत्येश की चिट्ठी आई उसमें लिखा था-'प्यारी-प्यारी मां अमेरिका के सबसे सुंदर शहर में दफ्तर मिल गया है। लंबी कार में दफ्तर जाता हूं। मकान भी बड़ा सा है। मां यहां धूल और गंदगी बिल्कुल नहीं है। मां मैं आपको कैसे बताऊं कि मैं यहां किते ठाठ-बाठ से रह रहा हूं। चिट्ठी ने फिर याद ताजा कर दी। घर का माहौल फिर किसी मातम जैसा हो गया।

उमेश खेत संभालता तो देवेश अपनी पत्नी को। वह रो पड़ती तो साथ में देवेश भी रो पड़ता। कभी-कभी उसको धमका भी देता। बस अब क्या उसके साथ मरने का इरादा है। जाने वालों के साथ कभी जाया जाता है। इसी तरह करते-करते साल कब गुजर गया किसी को पता ही नहीं चला। सत्येश की मां सूखकर लकड़ी हो गई। डाक्टरों को बहुत दिखाया लेकिन उन्हें कोई बीमारी नहीं मिली। सदमा कहकर वे अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते। एक दिन सत्येश की मां की हालत काफी नाजुक हो गई। उसने पति देवेश को पास बुलाकर कुछ कहना चाहा, उसी दौरान उमेश ने मां को पानी पिलाया। पानी पीकर उसने कहा- 'आज सपने में सत्येश मेरी गोद में बैठा हुआ था और मुझसे कह रहा था-'मां मुझे घी अच्छा नहीं लग रहा है, इसको खाने में से हटा दो। यह सुन देवेश की सफेद मूंछे आंसुओं से गीली हो गई। उमेश डाक्टर को लेकर आया। उसकी मां की सांस उखड़ी हुई थी। दो बार सत्येश का नाम लिया और गर्दन एक तरफ लुढ़क गई। देवेश ने अपने कंधे से उठाकर सफेद चादर पत्नी के शरीर पर डाल दी। उमेश आज बिन मां के हो गया।'

पूरे गांव में देवेश की पत्नी की मौत की खबर आग की तरह फैल गई। लोग अंतिम संस्कार के लिए जुटने लगे थे। लोग आपस में बात कर रहे थे-'मां हो तो ऐसी बिना बेटे के जिसने जीना ही नहीं चाहा। मां-बेटे का इतना प्रेम हमने आज तक नहीं देखा।'

सत्येश के पास खबर कर दी गई। अंतिम संस्कार के लिए उसका इंतजार किया। पूरा दिन पूरी रात गुजर गई। अगले दिन पड़ोस के मास्टर जी के पास फोन भी आया और तार भी आया। फोन तो चाचा जी ने सुना, पता नहीं क्या बात हुई वो तो वे ही जानते हैं लेकिन तार तो हमने भी पढ़ा था जिसमें लिखा था-'मां चली गई, बहुत दुख हुआ है सुनकर। फिर भी मैं इस हालात में नहीं हूं कि मां की अंतिम विदाई में शामिल हो सकूं। काम रुक जाएगा, नुकसान होगा। मां की कोई निशानी कोरियर से भिजवा देना दर्शन कर लूंगा।

देवेश ने तार मोड़-तरोड़ कर जेब में डाल लिया और एकदम खड़ा होकर बोला-'उमेश अब और देर मत करो।' चार जवानों के कंधों पर उमेश की मां की अर्थी थी और पीछे आदमियों का रेला। देवेश हाथ में अग्नि लिए चल रहा था। गांव की गलियों से अर्थी जब श्मशान घाट की तरफ जा रही थी तो एक बुजुर्ग अपने घर के दरवाजे पर रस्सी बांट रहा था। उसके साथ एक छोटा बच्चा बैठा खेल रहा था।

बुजुर्ग अर्थी देखकर खड़ा हो गया। उसने अर्थी को नमन किया, उनके गुजरने के बाद बुजुर्ग अपने काम में पुनः लग गया। साथ खेल रहे बच्चे ने पूछा-'दादा ये क्या था? बुजुर्ग ने थोड़ी देर सोचा फिर लंबी सांस लेकर कहा-'एक हंसते-बसते परिवार का विनाश।' अब इतने छोटे बच्चे को क्या पता कि परिवार का विनाश क्या होता है।

- खुशवीर मोठसरा '

गांव-गीत

गांव के इस आंगन के चारों ओर
लघु तुलसी वन है,
फूल पीपे बूटे भी, ओर उठे मन में।

●●●

सीताफल रामफल पेड़ों की पहचान,
गौधूली बेला से पक्षियों का गान।
सुर- लय से सधे बांस पत्तियों का मान,
तितलियों की रंगिनियां रह रह मधु पान।
गांव के इस आंगन के चारों ओर
लघु दहना वन है,
औषध फूल वाटिका सुगंध से,
शोर उठे मन में।

●●●

कार्तिक का पूरा माह दे बड़ा उपहार,
विष्णु तत्व संकीर्त्तन सात्विकी त्यौहार।
अगहन का तीस दिनी लक्ष्मी जी सहाय,
शंख ध्वनि हुलहुलियां भक्ति का बयार।
गांव के इस आंगन के चारों ओर
लघु मरुआ वन है,
गौर-गोबर अल्पनाएं, कल्पनाएं
ठौर उठे मन में।

●●●

तुलसी दहना मरुआ मध्यमता के घर में
सुख सुविधा भौतिकीय गांव के डगर में
अहंकार आडम्बर रहते सदा डर में
भय नहीं रहता है तनिक जगत चर अचर में
गांव के इस आंगन के चारों ओर
कुंद जूही वन है,
शीत धूप बारिश से सरसराएं
मोर उठे मन में।

-जोगेन्द्र महापात्र "जोगी"
जगदलपुर

पतझड़ सावन वर्षा

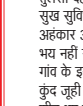

पतझड़ सावन वर्षा
ये जीवन के राज हैं।
सुख सावन की याद है-
तो दुख पतझड़ के राज हैं!

आंसू वर्षा की यादें
ये धरती के प्यास हैं।
पतझड़ सावन, वर्षा
ये जीवन के राज हैं!!

नाटक है ये जिन्दगी
कहानी है ये जीवन-
इसका लेखक उपर है
जो लिखकर लेख भेजता है!!!

सावन उसकी कविता है
जो रंगों से रचता है-
वर्षा उसकी संगीत है।
जो धुन बिजली देती है!!!!

नदियां कल कल स्वर देकर
संगीत में रस भरती।
पतझड़, सावन, वर्षा
ये जीवन के राद हैं!!!!!

- विमल तिवारी
धरमपुरा जगदलपुर

आइये, छुट्टी मनाने चलें

व्यंग्य

संत सज्जन व्यक्ति तो स्वर्गारोहण कर गए और हम उनके नाम से छुट्टियों का मजा ले रहे हैं। ध्यान करें तो पायेंगे कि प्रत्येक माह में दो संतों का जन्मदिन तो होता ही है और दो दिन मरण दिवस भी। पैदा होने की छुट्टियां और मरने की भी छुट्टी। हम सोच रहे हैं कि और संत इस देश में जन्म लेकर छुट्टियों का प्रतिशत बढ़ाएं ताकि देश में 365 दिनों तक छुट्टी होती रहे।

सांस्कृतिक त्यौहारों से भरा यह महान देश इतना अधिक महान है कि इसके एक-एक त्यौहार पर 7 से 11 दिनों तक की छुट्टियां रहती हैं। यदि ये त्यौहार सब धर्म के लोगों में हों तो पूरा देश त्यौहारों की छुट्टियां ही मनाता रहेगा। देश की किसको चिंता है जी, देश जाए भाड़ में।

बड़े लोगों की छुट्टियां तो बड़ी अजीब होती हैं। कभी मूड ऑफ है तो छुट्टी ले ली, कभी पत्नी का सिर दर्द है तो छुट्टी ले ली और घर चले गए। पूरा आफिस बंद-साहब जो छुट्टी पर गए हैं।

महान देश के खेल भी महान हैं। क्रिकेट के कारण तो महीनों देश रूका खड़ा रहता है। बाबू से लेकर साहब और बड़े साहब से लेकर चपरासी के कान स्कोर पर लगे रहते हैं। भाई खेल ही महान है। फिर कोई छुट्टी लेकर घर पर यह खेल नहीं देखता। सब के सब कार्यालय में आकर ही यह खेल टी. वी. पर देखते हैं और कार्यालय में पिकनिक का आनंद लेते हैं।

बड़े महान लोग छुट्टियां मनाने देश के बाहर जाते हैं, सरकारी खर्च पर पूरे खानदान सहित ऐश करके लौटते हैं। साथ में विदेशी सामान लेकर घर-घर में गिफ्ट करने भी जाते हैं। उसके लिए भी एक सप्ताह की छुट्टी ले लेते हैं।

देश में भूखे वह व्यक्ति है जो अपनी इच्छा से कभी छुट्टी नहीं ले सकता। देश में सबसे सुखी ईसान है जो कभी भी छुट्टी ले सकता है। कमोबेश 365 दिनों में 200 छुट्टियां सरकारी कर्मचारी आराम से ले सकता है। 165 दिनों में हड़ताल, कलम रोको आंदोलन। बिजली बंद तो काम बंद जैसे देर से बहाने उसकी जेब में रहते हैं ताकि वह जब चाहे, छुट्टियों का आनंद ले सके।

देश के नेता जब छुट्टी मनाने नदी, जंगलों में जा सकते हैं तो आप और हम क्यों नहीं जा सकते? क्या नेता या पार्टी अध्यक्ष, मंत्री ईसान नहीं हैं? क्या वे भारतीय नहीं हैं? क्या उनकी इच्छाएं भी हिन्दुस्तान की छुट्टियां भोगने की नहीं होती हैं? भाई छुट्टियां पर सभी का अधिकार है, चाहे राजा हो, चाहे चपरासी। सब चाहते हैं कि घर बैठकर वेतन मिलता रहे।

पिछले दिनों आधा दर्जन धर्म गुरूओं के जन्म-निर्वाण पर उन धर्म के अनुयायिओं द्वारा छुट्टियों की मांग की गई है। ईश्वर करे उनकी मांग स्वीकार कर ली जाए ताकि ये एक दर्जन छुट्टियां हमें और मिल सकें।

इस देश की रीत ही निराली है। देखिए न धर्म गुरूओं के बाद अब मजदूर दिवस, मानव अधिकार दिवस, उपभोक्ता दिवस, हिन्दी दिवस, बाल श्रमिक मुक्ति दिवस, महिला दिवस और न जाने कितने दिवस पर भी छुट्टियों को मान्यता दी जा रही है और हम विचार कर रहे हैं कि एक प्रतिनिधि मंडल को विश्व भ्रमण हेतु भेज दें और विश्व के प्रसिद्ध देवी-देवताओं के दिनों पर भी यहां छुट्टियों का आयोजन रखें ताकि विश्व में हमारी छवि धर्म निरपेक्ष की बन सके। इसके अतिरिक्त साहित्यकारों के दिनों को इसके अंतर्गत ले आएं ताकि पूरा वर्ष छुट्टी मनाई जा सके।

हमारा विचार तो यह है कि महिला वर्ष, बाल वर्ष की तरह एक अवकाश वर्ष भी रखा जाए जिसमें वर्ष भर छुट्टियां ही छुट्टियां रहें।

> नया साल आने के एक महीने पहले वर्ष भर का सरकारी छुट्टियों का कैलेन्डर अखबारों में छप जाता है। मेरी पत्नी ने उन छुट्टियों के अनुसार अपने पूरे कार्यक्रमों को तय कर लिया है। मेरी पत्नी ही क्या, राज्य और देश के सब सरकारी कर्मचारियों ने उस छुट्टियों के कैलेन्डर को संभाल कर रख लिया होगा।
>
> हमारा देश तो सदियों से महान रहा है और इसकी जनसंख्या के अनुसार उसी क्रम में यहां साधु, भगवान, संत आदि रहे हैं। वैसे मेरे विचार से जहां सबसे अधिक पापी होते हैं, वहीं सबसे अधिक संत होते हैं। भैया यदि पाप होगा ही नहीं तो इन संतों को कौन पूछेगा? सब संत नहीं हो जायेंगे।

अवकाश वर्ष में मिलेट्री, पुलिस भी सम्मिलित रहनी चाहिए ताकि आम नागरिकों को अवकाश का महत्त्व समझ में आ सके। अवकाश का महत्त्व तो आज सीमाओं पर पहरा दे रहे जवानों के कारण हमें ज्ञात नहीं होता। यदि सेनाएं एक सप्ताह अवकाश ले लें तो ज्ञात होगा कि हम जीवन भर के लिए काम करने को मजबूर हो जायेंगे यानी गुलाम बना दिए जायेंगे।

अवकाश सरकार ने अपनी सुविधाओं के लिए बनाए हैं। आपकी सुविधा कहीं किसी को असुविधा तो नहीं दे रही है, इस पर कभी आपने विचार किया है?

इस पर विचार करने, चिंतन करने के लिए भी तो अवकाश लेना होगा। फिलहाल तो पूरा देश उसकी सरकार, मंत्री, अधिकारी, चपरासी, जनता अवकाश का आनंद मनाने में लीन हैं। देश की किसको चिंता है, देश जाए भाड़ में। हमें तो अपनी छुट्टियों से मतलब है। देश चल रहा है, चलता रहेगा, किसी की छुट्टी से समय या देश रूका है जो ठहरेगा? इसलिए भाई साहब आप भी आवेदन लगा कर अवकाश पर चले जाएं और जीवन का आनंद लें।

नगे-फटेहाल, आदिवासियों, दलितों, भूखों, निजी मजदूरी करने वालों, दैनिक मजदूरी करने वालों, मजदूरों, नौकरो, गुलामो, तुम कभी सपने में भी अवकाश की कल्पना मत करना क्योंकि अवकाश लेना तुम्हारे भाग्य में नहीं है। तुम्हारे भाग्य में तो केवल अवकाश लिए व्यक्तियों को देखना और उनकी गुलामी करना ही है और तुम ही प्यारे, सच्चे देशभक्त भी हो जो कभी अवकाश नहीं लेते और जीवन भर देश के लिए, अपने परिवार के लिए ईमानदारी से कार्य करते रहते हो। तुम्हें हमारी कलम सलाम करती है। हमारा प्रणाम स्वीकार करो।

- डॉ. गोपाल नारायण आवटे

मुक्तक

है खुला आकाश कैसी बात करते हो,
छोड़ नैतिकता खुला आघात करते हो।
भूल अपनेपन भरे समृद्ध उज्जवल संस्कार,
आस्था पर क्यों कुठाराघात करते हो?

- डॉ. सुधाकर आशावादी

पर्यावरण के प्राण पंचतत्वों पर आधारित महाकाव्य

ममोला

रचनाकार-शान्ती तिवारी, जगदलपुर

वायु

नव पयस्विनी झरती मन में, उत्साह प्रबल मानस छाया।
नव पाथ अग्रसर पद प्रति पल, नभ पर सज्जित नीलाभ अंबर।
आशा के प्रज्वल दीपों से, दीपित होता उर, मन अंतर।
संबल हमने पा लिया, तब पग तल में नाथ।
धवल आस त्वेष सम्मुख आलोकित है पाथ।
तुमने हमको नवजीवन दे, अब पातक को सनमान दिया।
तब दर्शन पा न सके हम तो, पर सुंदर सा सत ज्ञान दिया।
निज जीवन दान सदा करते, घर के हित को घर के मन में।
यह ज्ञान हमें मिल जाय सदा, अवलीक रहें नित ही मन में।
पर के हित जो तन धार रहे, तन जीवन अर्पण हैं करते।
अपने सुख से न कभी जग में, अपने यश की सुकथा कहते
जन में जन से नित पूज्य रहें, पर आतप वे निज पे सहते।
नत है जग ये उनके पद में, युग से युग की सुकछा कहते।

गगन

हे अंतरिक्ष अंबर, व्योम अनंग।
घौ गगन नभ घुतिपुंज, देव अनंत।
हे जगत वितान धारी, शून्य पुष्कर।
तानो छत्र पावन, दिव्य अंबर।
पग बोझिल बोझिल हैं, अवलंब कहां यह देख रहे।
बस धुंध भरी दिखती हमको, तल अंबर में स्वरेख रहे।
भटके अथथा मग में नित ही, दृप में पड़ के सब भूल गये।
अवमारग हो जग में हमने, नित नूतन पेय अपेय पिये।
अवराधन हैं करते पग में, तब पावन में अवदान मिले।
हम अर्चक हैं, हम याचक हैं, शुभ सुंदर जीवन दान मिले।
हे नाथ, तिहारे पग तल में, निद जीवन सुमन चढ़ाते हैं।
हे नाद ब्रम्ह तव चरणों में, पापक हम शीश झुकाते हैं।
हे देव जगत में सर्वप्रथम अवतार धरे इस जगती पर।
संतति सर्जन की आस लिये, ताना शुभ छत्रक धरती पर।
संतप्त तप्त रवि किरणों से, प्राणी की तुम रक्षा करते।
धूमक, रजकण अथच नाद सब, ले सहज हास हिय मे भरते।
पग में देवक के हम पापक, करते सित पुहप पुष्प अर्पण।
विस्तार तने घन मेघ भरा, मिल जाय नाथ शीतल तर्पण।
शनैःशनैः पग अग्रसर, पग- पग में कटु शूल।
आस दीप मन में धवल, मिले सुवासित कूल।
ठिठक पड़े पग अकस्मात मग, थय जकड़न मानो पांवों में।

क्रमशः